उलटा होइहि कह हनुमाना । मतिभ्रम तोर प्रगट मैं जाना ।।
सुनि कपि बचन बहुत खिसिआना । बेगि न हरहुँ मूढ़ कर प्राना ।।
सुनत निसाचर मारन धाए । सचिवन्ह सहित बिभीषनु आए ।।
नाइ सीस करि बिनय बहूता । नीति बिरोध न मारिअ दूता ।।
आन दंड कछु करिअ गोसाँई । सबहीं कहा मंत्र भल भाई ।।
सुनत बिहसि बोला दसकंधर । अंग भंग करि पठइउ बंदर ।।

दो०-कपि के ममता पूँछ पर सबहि कहउँ समुझाइ।
तेल बोरि पट बाँधि पुनि पावक देहु लगाइ।। **24** ।।

पूँछ हीन बानर तहँ जाइहि । तब सठ निज नाथहि लइ आइहि ।।
जिन्ह कै कीन्हिसि बहुत बड़ाई । देखउँ मैं तिन्ह के प्रभुताई ।।
बचन सुनत कपि मन मुसुकाना । भइ सहाय सारद मैं जाना ।।
जातुधान सुनि रावन बचना । लागे रचैं मूढ़ सोइ रचना ।।
रहा न नगर बसन घृत तेला । बाढ़ी पूँछ कीन्ह कपि खेला ।।
कौतुक कहँ आए पुरबासी । मारहिं चरन करहिं बहु हाँसी ।।
बाजहिं ढोल देहि सब तारी । नगर फेरि पुनि पूँछ प्रजारी ।।
पावक जरत देखि हनुमंता । भयउ परम लघुरूप तुरंता ।।
निबुकि चढ़ेउ कपि कनक अटारीं । भईं सभीत निसाचर नारीं ।।

दो०-हरि प्रेरित तेहि अवसर चले मरूत उनचास।
अट्टहास करि गर्जा कपि बढ़ि लाग अकास।। **25** ।।

देह बिसाल परम हरूआई । मंदिर ते मंदिर चढ धाई ।।
जरइ नगर भा लोग बिहाला । झपट लपट बहु कोटि कराला ।।
तात मातु हा सुनिअ पुकारा । एही अवसर को हमहि उबारा ।।
हम जो कहा यह कपि नहिं होइ । बानर रूप धरें सुर कोई ।।
साधु अवग्या कर फलु ऐसा । जरइ नगर अनाथ कर जैसा ।।
जारा नगरू निमिष एक माहीं । एक बिभीषन कर गृह नाहीं ।।
ता कर दूत अनल जेहिं सिरिजा । जरा न सो तेहि कारन गिरिजा ।।
उलटि पलटि लंका सब जारी । कूदि परा पुनि सिंधु मझारी ।।

दो०-पूँछ बुझाइ खोइ श्रम धरि लघु रूप बहोरि।
जनकसुता कें आगें ठाढ़ भयउ कर जोरि।। **26** ।।

मातु मोहि दीजे कछु चीन्हा । जैसे रघुनायक मोहि दीन्हा ।।
चूड़ामनि उतारि तब दयऊ । हरष समेत पवनसुत लयऊ ।।
कहेहु तात अस मोर प्रनामा । सब प्रकार प्रभु पूरनकामा ।।